

डॉ० सुरेश कुमार (2025)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित हिंदी दलित साहित्य की दशा और दिशा
International Multidisciplinary Research & Reviews, 4(4), 148-154.



INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH & REVIEWS

journal homepage: www.ijmrr.online/index.php/home

भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित हिंदी दलित साहित्य की दशा और दिशा

डॉ० सुरेश कुमार

एसोसिएट प्रोफेसर हिंदी, राजकीय
महाविद्यालय पिहानी हरदोई
(उत्तर प्रदेश)

How to Cite the Article: डॉ० सुरेश कुमार (2025) भारतीय दलित साहित्य अकादमी
द्वारा प्रकाशित हिंदी दलित साहित्य की दशा और दिशा *International Journal of
Multidisciplinary Research & Reviews*, 4(4), 148-154.



<https://doi.org/10.56815/ijmrr.v4i4.2025.148-154>

Keywords

सम्मानपूर्वक,
सृजनशीलता,
प्रगतिशीलता,
तर्कबद्ध,
ब्राह्मणवाद,
राजनीतिक,
अंधविश्वास,
कर्तव्य,
सेवाग्राम,
साप्ताहिक

Abstract

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के प्रकाशन की एक महत्वपूर्ण सम्पादित पुस्तक है, जिसका प्रथम संस्करण- 26 जनवरी 2003 में प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक का सम्पादन प्रसिद्ध दलित साहित्यकार डॉ० माता प्रसाद ने किया है, जिसमें डॉ० सोहन पाल सुमनाक्षर, डॉ० जय प्रकाश कर्दम, कंवल भारती, डॉ० अवन्तिका प्रसाद मर्मट, डॉ० धर्मवीर, डॉ० दयानन्द बरोही, डॉ० मुद्रा राक्षस, डॉ० कुसुम वियोगी, श्री रमणिका गुप्ता, शरण कुमार लिम्बाले आदि 18 दलित साहित्यकारों एवं विद्वानों के दलित साहित्य के इतिहास, साहित्य, सौन्दर्यशास्त्र पर लेख संकलित हैं।

पुस्तक में प्रथम लेख, 'दलित साहित्य का आन्दोलन' में डॉ० सोहन पाल सुमनाक्षर जी ने दलित साहित्य का सामाजिक, ऐतिहासिक, अन्वेषण करते हुए पूर्व वैदिक काल, उत्तर वैदिक काल, मध्यकाल और आधुनिक काल में विभाजित किया है। इस लेख में डॉ० सुमनाक्षर ने पूर्व वैदिककाल में अनाथ, दास, दस्यू को शूद्रों का पूर्वज बताते हुए उत्तर वैदिक काल में शूद्रों के सामाजिक प्रतिबंध, मध्यकाल में बौद्ध और जैन धर्म आन्दोलन से उपजे सिद्धनाथ और संत-साहित्य की चर्चा करते हैं। आधुनिक काल में वे डॉ० अम्बेडकर के दलितोत्थान आंदोलन से उपजे मराठी दलित साहित्य और बाद में हिन्दी दलित साहित्य का ऐतिहासिक क्रम प्रस्तुत करते हैं।

1. INTRODUCTION



The work is licensed under a Creative Commons Attribution
Non Commercial 4.0 International License

डॉ० सुरेश कुमार (2025)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित हिंदी दलित साहित्य की दशा और दिशा*International Multidisciplinary Research & Reviews, 4(4), 148-154.*

पुस्तक के दूसरे लेख “दलित साहित्य और अम्बेडकर” में डॉ० जयप्रकाश कर्दम ने दलित साहित्य को अम्बेडकर के दलितोत्थान आन्दोलन का परिणाम बताते हुए डॉ० अम्बेडकर के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक कार्यों की चर्चा करते हैं। डॉ० जयप्रकाश कर्दम के अनुसार “अम्बेडकर के ये विचार, और मान्यताएं ही दलित साहित्य का आधार और प्राण हैं।”¹

पुस्तक का तीसरा लेख— ‘हिन्दी दलित साहित्य का संक्षिप्त इतिहास’ कॅवल भारती का एक महत्वपूर्ण शोध लेख है। इस लेख में भारती जी ने हिन्दी दलित साहित्य के इतिहास को तीन भागों में विभाजित कर वर्णित किया है—1. आदिकाल, 2. मध्यकाल और 3. आधुनिक काल।

आदिकाल में वे सिद्धों के वर्णव्यवस्था के खिलाफ विद्रोह और नाथ पंथ के पाखण्ड, रुढ़ियों, प्राणिहिंसा आदि के विरोध की चर्चा करते हैं। इसी क्रम में वे संत साहित्य को नाथो-सिद्धों की परम्परा से जोड़ते हुए दलित साहित्य के संस्थापक मानते हैं “वे दलित चेतना के पहले और सच्चे संवाहक हैं।”²

आधुनिक काल या मुक्ति युग को भारती जी तीन धाराओं में विभक्त करते हैं— 1. आर्य समाजी 2. गांधीवादी और 3. अम्बेडकरवादी। आर्य समाजी में वे बिहारी लाल हरित, बुद्ध संघ प्रेमी, बदलू राम ‘रसिक’, प्रेमचंद आर्य, मंगल देव विशारद आदि को रखते हैं। गांधी वादी युग में मैथिलीशरण गुप्त, मोहन लाल चतुर्वेदी, बच्चन विष्णु प्रभाकर आदि साहित्यकारों को रखते हैं। अम्बेडकरवादी धारा को दो धाराओं में विभाजित करते हुए पहली धारा में पं० चन्द्रिता प्रसाद ‘जिज्ञासु’, विजय कुमार पुजारी आदि की चर्चा करते हैं। दूसरी धारा में दलित पत्र-पत्रिकाओं, विमर्शों की चर्चा करते हुए इसे दलित नवजागरण का नाम देते हैं “हम दलित चेतना के वर्तमान युग को नव जागरण का नाम भी दे सकते हैं।”³

पुस्तक के तीसरे लेख “भारतीय प्राचीन संस्कृतिक का दलित साहित्य पर प्रभाव” में डॉ० अवन्तिका प्रसाद मर्मट ने पूर्ववैदिक कालीन संस्कृति बौद्ध संस्कृति का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत करते हुए डॉ० भीमराव अम्बेडकर के विचार, दलितोत्थान आन्दोलन की बात करते हैं। ‘दलित साहित्य पर प्रभाव’ उपलेख में वे पूर्व वैदिक साहित्य का समीक्षात्मक विश्लेषण करते हुए दलित साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का कारक बताते हैं। लेख के अंत में वे लिखते हैं “सिंधु संस्कृति से दलितों शूद्रों को उनकी प्राचीन संस्कृति का आभास हुआ है, वहीं वैदिक संस्कृति ने उनके विरुद्ध हुए सदियों के उत्पीड़न शोषण को उजागर किया गया है। बौद्ध संस्कृति ने दलितों को समानता, भातृत्व के अलावा सम्मानपूर्वक जीवन जीने के लिए प्रेरित किया है।”⁴

पुस्तक के अगले लेख “दलित साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि” में लेखक बुद्धशरण हंस ने दलित साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का कारण माना है। ‘सामाजिक परिवर्तन के जन्म और आन्दोलन के साथ ही दलित साहित्य का जन्म हुआ।’

लेख में बुद्धशरण हंस जी ने दलित साहित्य को आम आदमी के जीवन का दस्तावेज माना है “आज दलित साहित्य आम आदमी का जीवन दर्पण बन गया है। शोषित, पीड़ित, दीनहीन आम जनता के दुःख-सुख, अभाव और आवश्यकताओं का दर्द बिखेरता, रास्ता दिखलाता हुआ आज का दलित साहित्य गतिवान है।”⁵



डॉ० सुरेश कुमार (2025)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित हिंदी दलित साहित्य की दशा और दिशा

International Multidisciplinary Research & Reviews, 4(4), 148-154.

पुस्तक के अगले लेख “दलित साहित्य की परिभाषा समग्रता और पूर्णता की ओर” में डॉ० धर्मवीर भारती ने पूर्व की सामाजिक-साहित्यिक मान्यताओं का ऐतिहासिक अन्वेषण कर दलित साहित्य की व्यापक परिभाषा की है दलित साहित्य पीड़ा से लेकर मुस्कान तक है। इसमें रोने के बजाए मुस्कान की खोज के द्वारा समग्रता और पूर्णता की ओर मनुष्य का प्रयाण है।

पुस्तक के अग्रिम लेख ‘दलित साहित्य एक चिंतन’ में डॉ० सुशीला टाकभौरे ने स्वानूभूत और सहानूभूति विवाद के दलित विमर्श पर चर्चा करते हुए दलित साहित्य के महत्व को रेखांकित किया है “किसी भी जाति या समाज के साहित्य का जितना महत्व हो सकता है, दलित साहित्य का महत्व उससे भी अधिक है, क्योंकि इसमें मात्र विवरण या उल्लेख नहीं है सृजनशीलता है, चरित्रों की व्यक्तियों की निर्मिता है।”⁶

पुस्तक के आगे के लेख “दलित साहित्य मुक्ति के लिए सांस्कृतिक कर्म” में चमन लाल जी ने प्रगतिशील मार्क्सवादी, स्त्री-साहित्य और दलित साहित्य को मुक्ति का सांस्कृतिक कर्म कहा है और उनमें कुछ सामाजिक-सांस्कृतिक पक्ष भी दिखलाए हैं।

पुस्तक के अगले लेख “दलित साहित्य का समाज पर प्रभाव” में जिया लाल आर्य ने साहित्य की विस्तृत परिभाषा देते हुए, दलित साहित्य आन्दोलन अम्बेडकर से प्रभावित प्रेमचन्द्र के साहित्य की चर्चा करते हुए समाज की प्रगतिशीलता के लिए दलित साहित्य को अनिवार्य माना है “जब तक प्रगतिशील एवं प्रभावशाली दलित साहित्य का सार्थक सृजन नहीं होगा, तब तक पूरा समाज पिछड़ा रहेगा।”⁷

दूसरे लेख ‘दलित साहित्य में सौन्दर्यशास्त्र’ में शरण कुमार लिम्बाले ने मराठी साहित्य समीक्षा और हिन्दी साहित्य समीक्षा का आलोचनात्मक मूल्यांकन करते हुए दलित साहित्य के सौन्दर्यशास्त्र की कसौटियों निर्धारित की है— अनुभव की प्रमाणिकता, अनुभवों का सार्वजनिकरण, अनुभवी विस्तृत सीमा और अनुभव की प्रासंगिकता।

पुस्तक के अगले लेख ‘दलित साहित्य में दलित कथाकारों का योगदान’ में डॉ० कुसुम वियोगी ने दलित साहित्य का संक्षिप्त परिचय देते हुए, दलित कथाकारों यथा—ओम प्रकाश बाल्मीकि, मोहन दास नैमिशराय, सूरजपाल चौहान, जयप्रकाश कर्दम, सत्य प्रकाश, डॉ० दयानन्द बटोही, डॉ० काली चरण स्नेही, डॉ० शत्रुघ्न कुमार, रजत रानी मीनू, सुमन प्रभा आदि की चर्चा की है। दलित कथा साहित्य के महत्व को रेखांकित करते हुए वे लिखती हैं “दलित साहित्यकारों की कहानियाँ सीधे-सीधे उनके परिवेश एवं संस्कार से जुड़ी अभिव्यक्ति प्रकट करती हैं, जो आम साहित्य से हटकर एक मुक्त संसार की रचना धर्मिता लिए हैं।”⁸

पुस्तक के संपादक डॉ० माता प्रसाद ने अपने लेख ‘हिन्दी लोकगीतों में दलित चेतना’ में लोकगीतों को दलित चेतना का मुख्य स्वर माना है “लोक मानस में गांव के अनपढ़, गरीब, दलित, पिछड़े लोग और स्त्रियाँ ही अधिक संख्या में हैं, इसलिए लोक गीतों में इन्हीं की भावनाओं के स्वर मुखरित होते हैं।”⁹



डॉ० सुरेश कुमार (2025)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित हिंदी दलित साहित्य की दशा और दिशा

International Multidisciplinary Research & Reviews, 4(4), 148-154.

पुस्तक के महत्वपूर्ण लेख शैक्षणिक पाठ्यक्रम में दलित साहित्य की सार्थकता में रमणिका गुप्ता जी ने स्वतंत्रता के बाद की शिक्षा व्यवस्था पर गहरा सामाजिक विश्लेषण करते हुए ऐसे साहित्य (विषय) को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने की वकालत करती हैं, जो यथार्थ पर टीका हो 'ऐसे साहित्य और ऐसे इतिहास को बदलकर, सत्य पर आधारित जो भी उपलब्ध है, वही इतिहास उसके सही विश्लेषण के साथ हमें पाठ्यक्रम में शामिल करना होगा।' ¹⁰

पुस्तक के अंतिम लेख 'दलित साहित्य के प्रेरणास्रोत' में डॉ० राजमल सिंह 'राज' ने उत्तर भारत में दलित साहित्य कविता का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत करते हुए उत्तर भारत में दलित साहित्य सृजन को सन्त रविदास और संत कबीर से प्रारंभ माना है। आधुनिक काल में उन्होंने अछूतानन्द हरिहर, बंशीधर बेधडक मुशाफिर, भिक्षु विमल मित्र आदि के सहज साहित्यिक विकास का वर्णन किया है।

सिधु घाटी बोल उठी— यह पुस्तक भारतीय दलित साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ० सोहनपाल सुमनाक्षर की कविताओं का संग्रह है। इसका प्रकाशन 26 जनवरी 1987 को भारतीय दलित साहित्य अकादमी के प्रकाशन विभाग से हुआ। यह काव्य—'संग्रह' दलित वर्ग के ऐतिहासिक गौरव को काव्यमय दस्तावेज के रूप में प्रस्तुत करती है। दूसरे शब्दों में कहे तो यह पुस्तक दलित समाज एवं संस्कृति के ऐतिहासिक अन्वेषण से दलितों को परिचित कराने का एक काव्यमयी प्रयास है।

अंधा समाज बहरे लोग— प्रस्तुत पुस्तक भी अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ० सोहनपाल सुमनाक्षर के काव्यों का संग्रह है। यह पुस्तक अकादमी के प्रकाशन विभाग द्वारा 26 मई 1988 को प्रकाशित हुई। इस पुस्तक का विषय भारतीय समाज व्यवस्था की जाति—पाति, छूआछूत, ऊँच—नीच, धार्मिक अंध—विश्वास और पाखण्ड का तर्कबद्ध खण्डन किया गया है।

अब नहीं रहेंगे हाशिए पर— भारतीय दलित साहित्य अकादमी के प्रकाशन की एक महत्वपूर्ण पुस्तक है, जिसके सम्पादक डॉ० सोहनपाल सुमनाक्षर जी हैं। इसका प्रकाश 1 जनवरी 1989 को हुआ। इस पुस्तक में विद्रोही तेवर से युक्त दलित कवियों की कविताओं को संकलित किया गया है। भारतीय समाज व्यवस्था और धार्मिक व्यवस्था की यथार्थ सच्चाई इस पुस्तक में बखूबी देखी जा सकती है।

अन्य महत्वपूर्ण पुस्तकें— 'बुद्ध टू अम्बेडकर' अंग्रेजी भाषा में लिखित डॉ० सोहनपाल सुमनाक्षर जी की पुस्तक है। पुस्तक में भगवान बुद्ध के समय से लेकर डॉ० भीम राव अम्बेडकर तक के दलितोत्थान आन्दोलन के स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है। डॉ० सोहनपाल सुमनाक्षर जी की एक अन्य महत्वपूर्ण पुस्तक 'विश्व विभूति डॉ० अम्बेडकर (1990)' है। इस पुस्तक में डॉ० अम्बेडकर की सामाजिक उपलब्धियों का वैश्विक परीप्रेक्ष्य में वर्णन किया गया है। 'आदिम जाति चमार' (1991) आदिम जाति बाल्मीकि (1992), हमारे संत और समाज सुधारक (1994) डॉ० सुमनाक्षर जी के दलित समाज के ऐतिहासिक अन्वेषण से संबंधित पुस्तकें हैं।



डॉ० सुरेश कुमार (2025)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित हिंदी दलित साहित्य की दशा और दिशा

International Multidisciplinary Research & Reviews, 4(4), 148-154.

“मूल भारती से दलित” (1996) डॉ० राजमल सिंह राज की पुस्तक है, जिसमें दलित वर्ग का ऐतिहासिक अन्वेषण किया गया है। डॉ० अम्बेडकर भजनावली (1999) डॉ० राजमल सिंह राज की डॉ० अम्बेडकर के व्यक्तित्व से प्रभावित काव्य-संग्रह है। डॉ० राजमल सिंह राज की एक अन्य पुस्तक ‘जागा मेहनतकश इंसान’ (1999) है। यह पुस्तक दलित वर्ग में ‘भारतीय दलित साहित्य अकादमी’ द्वारा प्रसारित दलित चेतना को बिम्बित करती है।

‘भारत की गुलामी के 22 सौ साल’ भारतीय दलित साहित्य अकादमी के ऐतिहासिक अन्वेषण की महत्वपूर्ण पुस्तक है। इस पुस्तक के लेखक श्री प्रदीप कुमार मौर्य हैं। इस पुस्तक में सिन्धुघाटी सभ्यता से लेकर वर्तमान समय तक के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक इतिहास का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। श्री प्रदीप कुमार की एक अन्य महत्वपूर्ण पुस्तक ‘बौद्धधर्म गया से अयोध्या तक (2003)। यह पुस्तक भारतीय सामाजिक व्यवस्था के ऐतिहासिक परिवर्तन का दर्पण प्रस्तुत करती है।

‘सृजन के कण’ जी०पी० पचौरिया ‘दीप’ की दलित साहित्य के प्रेरणास्रोत और वैचारिक सिद्धांत को प्रस्तुत करती है। “हम एक हैं” (2005) प्रसिद्ध दलित साहित्यकार डॉ० माता प्रसाद की दलित संगठित संघर्ष को मजबूत करने के लिए लिखी गई एक वैचारिक पुस्तक है।

पत्र-पत्रिकाएं

हिमायती-भारतीय दलित साहित्य अकादमी का मुख्य पत्र ‘हिमायती (पाक्षिक) अकादमी की स्थापना से पूर्व का पत्र है। इसका सम्पादन एवं प्रकाशन डॉ० सोहन पाल सुमनाक्षर जी द्वारा 2 अक्टूबर 1962 से अनवरत किया जा रहा है। वर्तमान में इस पत्र ने अपने 58 सफल वर्ष को पूर्ण किया है। दलित साहित्य में इस पत्र की लोकप्रियता का पता इससे चलता है कि प्रतिवर्ष इस पत्र के 24 अंक प्रकाशित होते हैं और लाखों लोगों द्वारा पढ़े जाते हैं।

‘हिमायती’ आधुनिक दलित साहित्य के उद्भव के समय का पत्र है। डॉ० सुमनाक्षर जी ‘हिमायती’ पत्र निकालने के पीछे कारण बताते हुए लिखते हैं “बाबा साहब डॉ० अम्बेडकर ने इन्हीं ब्राह्मणवादी झूठी मान्यताओं के खिलाफ उनका पर्दाफाश करने के लिए मराठी में चार पत्र निकाले, जो उनके परिनिर्वाण के बाद बंद हो गये थे। हिन्दी में कोई ऐसा पत्र नहीं था, जो उनके विचारों को लेकर चले, जो ब्राह्मणवाद एवं वर्ण व्यवस्था के विरुद्ध आवाज उठा करके



डॉ० सुरेश कुमार (2025)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित हिंदी दलित साहित्य की दशा और दिशा

International Multidisciplinary Research & Reviews, 4(4), 148-154.

शूद्र-अछूत दलितों में जन-जागृति का काम करे। यहां के मूल निवासी हिन्दुओं के गुलाम अछूतों को हिन्दू धर्म के पाखण्ड से बचाने और उनमें स्वाभिमान जागृत करने के लिए ही हमने यह 'हिमायती' पत्र प्रकाशित किया।¹¹

अतः स्पष्ट है कि 'हिमायती' पत्र का मूल उद्देश्य दलितोत्थान निमित्त दलित चेतना के विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विषयों पर लेख प्रकाशित करना है। डॉ० सोहनपाल सुमनाक्षर जी के अनुसार "हिमायती सदैव सामाजिक विफलताओं के विरुद्ध भगवान बुद्ध, बाबा साहब डॉ० अम्बेडकर एवं बाबू जगजीवन राम जी के सामाजिक एकता के सपनों को पूर्ण करने में कार्यरत है और अब तक समाज में जो चेतना इसके माध्यम से हुई है और देश में जो सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, आर्थिक परिवर्तन आया है, वह 'हिमायती' के 53 वर्षों का ही फल है।"¹²

'हिमायती' हिन्दी पाक्षिक के माध्यम से दलित समाज के लोगों को ज्ञात हुआ कि इस देश के मूल निवासी उनके पूर्वज इस देश के मालिक थे और सिन्धु घाटी सभ्यता के सर्जक थे। 'हिमायती' के माध्यम से दलित समाज के युवकों को दलित साहित्य लिखने के लिए प्रेरणा मिली। इसमें उनकी रचनाएं प्रकाशित हुईं और उन्हें प्रोत्साहित किया गया।

इसके साथ ही ब्राह्मणवादी, अंधविश्वास, आडम्बर, झूठी मान्यताओं, झूठी रिवाजों, स्वर्ग-नरक, पुनर्जन्म आज के भगवान को नकारते हुए दलितों को सही मार्ग दर्श दिया। इस प्रकार 'हिमायती' पत्र ने 'भारतीय दलित साहित्य अकादमी' के लिए एक उर्वर भूमि तैयार की।

अन्य पत्र-पत्रिकाएं

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ० सोहनपाल सुमनाक्षर जी के पत्रकार व्यक्तित्व को निरूपित करने वाले अन्य पत्र-पत्रिकाएं— सेवाग्राम (साप्ताहिक), नशाबंदी संदेश (मासिक) और मल्लिका (हिन्दी मासिक) हैं। वस्तुतः ये तीनों पत्रिकाएं भारतीय दलित साहित्य अकादमी के आरम्भिक काल के सहयोग की साक्षी रही हैं। 'सेवाग्राम पत्रिका' महाराष्ट्र के वर्धा से प्रकाशित होती थी, जिसका क्षेत्रीय कार्यालय दिल्ली में भी था। डॉ० सुमनाक्षर जी ने इस पत्रिका के संपादक के सह-संपादक थे। इस पत्र के वित्तीय सहायता से डॉ० सुमनाक्षर जी ने अपने समाज सुधार आन्दोलन और 'भारतीय दलित साहित्य अकादमी' के कार्य के आगे बढ़ाया। समयाभाव और समाज सुधार के कार्यों में व्यस्तता के कारण डॉ० सुमनाक्षर जी ने इस पत्र के सह-संपादक का पद त्याग दिया।

"नशाबंदी संदेश" पत्रिका समाज सुधारक डॉ० सुशीला नेयर और श्री रुपनारायण के सहयोग से श्रीराम चण्डोक के सम्पादन में निकली। डॉ० सुमनाक्षर ने इस पत्र के सम्पादन एवं प्रकाशन में सहयोगी के रूप में कार्य किया।

'मल्लिका' (हिन्दी मासिक) समाज सुधारक श्री मुरारीलाल के संपादन में दिल्ली से प्रकाशित होती थी। श्री मुरारी लाल ने समयाभाव और व्यस्तता के कारण संपादन एवं प्रकाशन का सम्पूर्ण भार डॉ० सुमनाक्षर को सौंप दिया। इस तरह सेवाग्राम साप्ताहिक, हिमायती पाक्षिक और मल्लिका मासिक पत्रिका के सम्पादन व प्रकाशन के कठोर कार्य को अपने कंधों पर लेकर और दलित साहित्य के सेवार्थ मन लगाकर, अपना कर्तव्य समझकर उन्होंने तीनों पत्र-पत्रिका के कार्यों को सुचारु रूप से निभाया और लोगों की सराहना के साथ उनका विश्वास जीता, जिससे समाज में मेरी प्रतिष्ठा बढ़ गई।



डॉ० सुरेश कुमार (2025)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित हिंदी दलित साहित्य की दशा और दिशा

International Multidisciplinary Research & Reviews, 4(4), 148-154.

2. AUTHOR(S) CONTRIBUTION

The writers affirm that they have no connections to, or engagement with, any group or body that provides financial or non-financial assistance for the topics or resources covered in this manuscript.

3. CONFLICTS OF INTEREST

The authors declared no potential conflicts of interest with respect to the research, authorship, and/or publication of this article.

4. PLAGIARISM POLICY

All authors declare that any kind of violation of plagiarism, copyright and ethical matters will take care by all authors. Journal and editors are not liable for aforesaid matters.

5. SOURCES OF FUNDING

The authors received no financial aid to support for the research.

REFERENCES:

प्रकाशन, नई दिल्ली 2003, पृष्ठ 30

वही, पृष्ठ 35

वही, पृष्ठ 47

वही, पृष्ठ 67

वही, पृष्ठ 71

वही, पृष्ठ 121

वही, पृष्ठ 150

वही, पृष्ठ 176

वही, पृष्ठ 196

डॉ० सोहनपाल सुमनाक्षर, स्रोत अस्मिता के लिए, नई दिल्ली 1964, पृष्ठ 03

वही, पृष्ठ 11

वही, पृष्ठ 13



[The work is licensed under a Creative Commons Attribution
Non Commercial 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/)